फिलिपियों

फिलिपी शहर सत्संग को राजदूत पौलुस का पत्र

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

मुक्तिदाता येशु के राजदूत पौलुस और शिष्य तिमोथियस जब रोम शहर की जेल में थे, वहाँ से उन्होंने फिलिपी शहर में सत्संग को धन्यवाद देते हुए यह एक पत्र लिखा। फिलिपी शहर ग्रीस देश में स्थित है। फिलिपी सत्संग के सत्संगी राजदूत पौलुस के शुभ संदेश प्रचार कार्य से बहुत खुश थे और उन्होंने पौलुस की आर्थिक मदद भी की। पौलुस ने इस पत्र के द्वारा भक्तों को उत्साहित किया कि वे हर समय प्रभु येशु के विचारों और स्वभाव को अपने में बनाए रखें।

प्रार्थना - हे परमात्मा, फिलिप्पी शहर के सत्संग में आए भक्तों को यह पत्र लिखने के लिए शिष्य पौलुस को प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। यह आपकी ही कृपा है कि हम भी, उनकी तरह, सत्संग में आए लोगों के प्रेम और उदारता का अनुभव कर पा रहे हैं।

. . . ■ . . .

1

1यह पत्र पौलुस और तिमोथियस की ओर से है, जो मुक्तिदाता येशु
के सेवक हैं। हम यह पत्र फिलिपी शहर में रहने वाले मुक्तिदाता येशु
के सभी पवित्र भक्तों, सत्संग के अनुभवी सेवकों और सेवादारों को
लिख रहे हैं।

[2]हमारे पिता परमात्मा और मुक्तिदाता प्रभु येशु तुम्हें कृपा और शांति
दें।

पौलुस का भक्तों के प्रति प्रेम

[3]जब-जब मैं तुम्हें याद करता हूँ, मैं अपने परमात्मा को धन्यवाद देता
हूँ। [4]और जब मैं तुम सबके लिए प्रार्थना करता हूँ, तब मेरा मन खुशी से
भर जाता है, [5]क्योंकि शुरू से लेकर अब तक मुक्तिदाता के शुभ संदेश
को फैलाने में तुम मेरे सहयोगी रहे हो। [6]एक बात का मुझे भरोसा है कि
परमात्मा ने तुम लोगों के मन में एक सुंदर काम की शुरुआत की है, तो
मुक्तिदाता येशु जब सब लोगों के अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करने
वापस आएँगे तब परमात्मा उस सुंदर काम को पूरा भी करेंगे।
[7]मेरा ऐसा महसूस करना ठीक ही है क्योंकि मेरे दिल में तुम्हारे लिए
एक खास जगह है। क्योंकि जब मैं यहाँ जेल में हूँ, मैं मुक्तिदाता येशु
के शुभ संदेश में कमियाँ निकालने वालों को सही जवाब दे रहा हूँ और
यह भी प्रमाणित कर रहा हूँ कि यह शुभ संदेश सत्य है। परमात्मा की
कृपा से हम सभी मिलकर मुक्ति के शुभ संदेश को सुनाने का काम
कर रहें हैं। [8]परमात्मा इस बात को जानते हैं कि मैं तुमसे मिलने के
लिए तरसता हूँ। परमात्मा यह भी जानते हैं कि मैं तुम्हारी चिंता वैसे ही
करता हूँ जैसे मुक्तिदाता येशु करते हैं। [9]मेरी यह प्रार्थना है कि तुम्हारा
प्रेम, ज्ञान और सब चीज़ों को परखने की समझ बढ़ती जाए, [10]ताकि
तुम जान सको कि अच्छा क्या है और जब मुक्तिदाता सब लोगों
के अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करने के लिए वापस आएँगे तो
तुम पवित्र और निर्दोष रहो। [11]और परमात्मा के उन अच्छे गुणों से भरे
रहो जो मुक्तिदाता येशु से ही प्राप्त होते हैं ताकि जब लोग तुम्हारे भले
कामों को देखें, तो वे मुक्तिदाता को भेजने वाले परमात्मा का आदर
और गुणगान करें।

जेल में रहते हुए भी पौलुस ने भक्तों का उत्साह बढ़ाया

[12]भक्त भाइयो और बहनो, मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि जो कुछ
मुझ पर बीता है, उसने मुक्तिदाता येशु के शुभ संदेश जानने में बहुत
से लोगों की मदद की। [13]यहाँ राजभवन में और बाहर लोगों में भी यह

बात फैल गई है कि मुक्तिदाता का शुभ संदेश सुनाने के कारण मैं
जेल में हूँ। [14]और मेरे जेल में रहने के कारण, प्रभु ने यहाँ के अधिकांश
भक्त भाइयों और बहनों को विश्वास दिलाया है कि वह उनकी भी
सहायता करेंगे। वे अब परमात्मा का संदेश दूसरों को बताने में नहीं
डरते हैं।
[15]कुछ लोग तो मुक्तिदाता का संदेश इस बुरे मकसद से सुना रहे हैं
क्योंकि वे अपने आप को मुझसे ज़्यादा बड़ा दिखाना चाहते हैं। पर
कुछ का मकसद अच्छा है। [16]ये अच्छे मकसद वाले लोग मुक्तिदाता
से प्रेम के कारण उनका प्रचार करते हैं और ये जानते हैं कि मैं
मुक्तिदाता येशु के शुभ संदेश की आलोचना करने वालों को सही उत्तर
देने के लिए यहाँ रखा गया हूँ। [17]परंतु बुरे मकसद वाले लोग मेरी जगह
लेने के मकसद से मुक्तिदाता का संदेश सुनाते हैं। वे मेरे जेल में रहते
हुए लोगों के मन में मेरे प्रति बुराई भर रहे हैं।
[18]तो क्या हुआ! अगर कुछ लोग बुरे मकसद से और कुछ लोग अच्छे
मकसद से मुक्तिदाता का संदेश फैला रहे हैं, मकसद चाहे कोई भी हो
संदेश तो फैल ही रहा है! इस कारण मैं खुश हूँ। [19]और मैं खुश रहूँगा
क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थना द्वारा और मुक्तिदाता येशु की
आत्मा की सहायता से मैं जेल से छूट जाऊँगा। [20]मैं यह उम्मीद और
आशा करता हूँ कि मैं अपने जीवन में ऐसा कुछ भी न करूँ जिससे मुझे
शर्मिंदा होना पड़े, परंतु हमेशा की तरह अब भी पूरी निडरता से चाहे,
जीवित रहूँ या मरूँ, मेरे जीवन द्वारा मुक्तिदाता को आदर-सम्मान
मिलता रहेगा। [21]जहाँ तक मेरी बात है, मैं केवल मुक्तिदाता को
सम्मान देने के लिए जीवित हूँ, और जब मैं मरूँगा, तो परमात्मा मुझे
परमस्वर्ग में जाने का आशीर्वाद देंगे। [22]परंतु यदि मैं जीवित रहा, तो
मैं मुक्तिदाता के लिए और अधिक फलदायी काम कर सकता हूँ। तो
मैं वास्तव में नहीं जानता कि इन दोनों में से क्या अच्छा है! [23]मैं बड़ी
दुविधा में हूँ। जी तो चाहता है कि इस संसार को छोड़कर मुक्तिदाता
के पास चला जाऊँ, क्योंकि यह बहुत अच्छा होगा। [24]लेकिन यह
ज़रूरी है कि मैं इस संसार में जीवित रहूँ क्योंकि तुमको अभी मेरी
ज़रूरत है। [25]इसलिए मुझे यकीन है कि मैं तुम्हारी आस्था बढ़ाने और
उसमें खुश रहने में तुम्हारी मदद करने के लिए जीवित रहूँगा। [26]और

जब मैं फिर तुम्हारे पास आऊँगा, तो जो मुक्तिदाता येशु मेरे द्वारा
करवा रहे हैं उसे देख कर तुम उन पर और भी गर्व कर सकते हो।
[27]सबसे बढ़कर, तुमको इस तरह से जीना चाहिए जिससे मुक्तिदाता
के शुभ संदेश को सम्मान मिले। फिर मैं तुम्हारे पास आऊँ या नहीं, पर
मैं सुनना चाहता हूँ कि तुम सब एक मन और एक आत्मा में काम कर
रहे हो और शुभ संदेश को फैलाने में और दूसरों को उस पर आस्था
रखने में एक-दूसरे की मदद कर रहे हो। [28]अपने शत्रुओं के विरोध से
मत डरना। उनका विरोध एक संकेत होगा कि वे परमात्मा द्वारा दंडित
और नाश किए जाएँगे, परंतु तुम दंड मिलने से बच जाओगे। [29]क्योंकि
तुम्हें न केवल मुक्तिदाता पर आस्था रखने का सौभाग्य मिला है, पर
उनके मार्ग पर चलने के कारण ज़ुल्म सहने का सौभाग्य भी मिला है।
[30]हम इन ज़ुल्मों को एक साथ सह रहे हैं। तुमने बीते समय में मुझ पर
हो रहे ज़ुल्मों को देखा है, और तुम जानते हो कि मैं आज भी इनका
सामना कर रहा हूँ।

2

मुक्तिदाता येशु जैसा स्वभाव रखें

[1]तुम मुक्तिदाता के हो और वह तुमको हौसला देते हैं। उनका प्रेम
तुमको शांति देता है। परमात्मा की पवित्र आत्मा तुमको एक करती
है, और तुम दूसरों के लिए चिंतित रहते हो। [2]तो इन अच्छी बातों को
करके मेरी खुशी को दुगना कर दो। एक जैसे विचार, एक-सा प्रेम,
एक-सा मन* और एक-सा लक्ष्य रखो। [3]स्वार्थी इच्छा और घमंड
से कोई काम न करो, परंतु नम्र बनो तथा दूसरों को अपने से बेहतर
समझो। [4]तुम में से हर एक व्यक्ति अपने ही बारे में नहीं, परंतु दूसरों के
बारे में भी सोचे। [5]तुम्हारी वैसी ही सोच होनी चाहिए जैसी मुक्तिदाता
येशु की थी।

[6]हालाँकि मुक्तिदाता येशु परमात्मा के रूप में थे,
फिर भी उन्होंने परमात्मा के बराबर होने का अधिकार
पाने की कोशिश नहीं की।

---

* **2:2** *एक-सा मन* - या, एक ही आत्मा

7 इसके बजाय, उन्होंने अपने सम्मानित पद को छोड़ दिया
और एक विनम्र सेवक का रूप धारण किया।
वह अन्य मनुष्यों की तरह दिखते थे
और उनकी मानवता को सांझा करते थे।
8 वह परमात्मा की आज्ञाकारिता में इतने नम्र बन गए
कि मौत को गले लगाने को तैयार हो गए,
ऐसी क्रूस की मौत
जो केवल खतरनाक क्रांतिकारियों को मिलती थी।
9 इस वजह से परमात्मा ने प्रभु येशु को
सबसे ऊँचे पद पर पहुँचाया,
और उन्होंने प्रभु येशु को
सभी नामों में सबसे सम्मानित नाम दिया।
10 तो परमस्वर्ग में और पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति,
और यहाँ तक कि वे सभी जो पहले ही मर चुके हैं,
प्रभु येशु के नाम का आदर करेंगे और उनकी भक्ति करेंगे।
11 हर कोई इस बात को मानेगा
कि मुक्तिदाता येशु ही सबके प्रभु हैं,
और इस प्रकार पिता परमात्मा का गुणगान होगा।

भक्त अँधेरी रात में रोशनी हैं

12 इसलिए मेरे प्रिय मित्रो, जिस प्रकार जब मैं, पौलुस, तुम्हारे साथ
था तो मैंने तुम्हें परमात्मा की आज्ञा का हमेशा पालन करते हुए देखा है,
अब जब मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ, परमात्मा के डर में उन लोगों की तरह
जीवन जीना जारी रखो जिन्होंने पापों की गुलामी से मुक्ति पा ली है।
13 तुम ऐसा इसलिए कर सकते हो, क्योंकि परमात्मा तुम में काम कर
रही है। परमात्मा तुमको जो वह चाहते हैं उसे करने की प्रेरणा देते हैं,
और वह तुमको ऐसा करने की शक्ति भी देते हैं।
14 तुम जो कुछ भी करते हो उसमें बुड़बुड़ाना या झगड़ा शामिल न
हो, 15 तब तुम परमात्मा के पवित्र और भोले-भाले बच्चे कहलाओगे।
तुम उन लोगों के बीच रहते हो जो चालाक और पापी हैं, परंतु तुम
उनके समान नहीं हो। तुम उन लोगों को अपनी अच्छाई दिखाओ जैसे

अँधेरी रात में तारे अपनी रोशनी दिखाते हैं। [16]तुमने मोक्ष देने वाले शुभ
संदेश को मज़बूती से थामा हुआ है। जब मुक्तिदाता सबके अच्छे और
बुरे कर्मों का न्याय करने आएँगे, तो मुझे यह जानकर खुशी होगी कि
तुमने मेरी शिक्षा को सुना और परमात्मा की आज्ञाओं का पालन किया
है। [17]यदि मैं तुम्हारी सेवा करके और प्रभु येशु में तुम्हारी आस्था को
मज़बूती देने के लिए अपना जीवन भी खो दूँ, तो मुझे संतोष होगा और
मुझे तुम्हारे लिए ऐसा करके खुशी मिलेगी। यह मेरे द्वारा परमात्मा को
चढ़ाए जाने वाली बलि के समान होगा। [18]मैं चाहता हूँ कि तुम भी इसी
प्रकार खुशी मनाओ और मेरी खुशी में शामिल हो जाओ।

पौलुस के भरोसेमंद दोस्त

[19]प्रभु येशु ने चाहा तो मुझे आशा है कि मैं जल्दी ही तुम्हारा
हाल-चाल लेने तिमोथियस को तुम्हारे पास भेजूँगा जिससे मुझे पता चले
कि तुम ठीक-ठाक हो। [20]मेरे पास तिमोथियस के सिवाय कोई अन्य
ऐसा व्यक्ति नहीं जिसे तुम्हारे बारे में सच्ची चिंता हो। [21]तिमोथियस
के अलावा मुक्तिदाता येशु की सेवा करने के बजाय, बाकी सब
अपना-अपना स्वार्थ पूरा करने में लगे हैं। [22]पर तिमोथियस के अच्छे
गुण तुम जानते हो। जैसे पुत्र पिता का साथ देता है वैसे ही उसने भी
शुभ संदेश का प्रचार करने में मेरा साथ दिया है। [23]जैसे ही मुझे पता
चलेगा कि यहाँ के अधिकारी मेरे साथ क्या करेंगे, मैं इस बात की
खबर देने के लिए तिमोथियस को तुम्हारे पास भेजूँगा। [24]मुझे भरोसा
है कि प्रभु येशु की कृपा से मैं जेल से छूट जाऊँगा और जल्दी ही तुमसे
मिलूँगा।

[25]इपाफ्रोदितास, मेरा भाई और साथी-भक्त जो मेरे साथ मिलकर
बुराई से संघर्ष कर रहा है, तुमने उसे मेरी देखभाल करने के लिए
भेजा था, लेकिन अब मैं उसे तुम्हारे पास वापस भेज रहा हूँ। [26]भक्त
इपाफ्रोदितास तुम सब से मिलने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा है, परंतु
वह चिंतित भी है, क्योंकि उसे पता चल गया है कि तुम उसकी बीमारी
के बारे में जानते हो। [27]सच तो यह है कि वह अपनी बीमारी के कारण
मरने वाला था। परंतु उस पर परमात्मा की कृपा हुई और वह स्वस्थ
हो गया। और मुझ पर भी परमात्मा की कृपा हुई कि अगर वह मर

जाता, तो दुखों का पहाड़ मुझ पर टूट पड़ता। [28]अब मैं इपाफ्रोदितास
को फिर से तुम्हारे पास भेजने के लिए पहले से कहीं अधिक उत्सुक
हूँ। तुम उसे देखकर खुश होगे, और मुझे अब और चिंता करने की
ज़रूरत नहीं होगी। [29]तो प्रभु येशु में बड़ी खुशी से अपने साथी भक्त
का स्वागत करो और ऐसे लोगों का सम्मान किया करो। [30]क्योंकि उस
ने मुक्तिदाता के काम के लिए अपनी जान जोखिम में डाली, और जो
काम तुम दूर रहने के कारण नहीं कर सकते थे। उसने वह काम किया
और वह मेरे लिए अपनी जान से भी हाथ धोने के लिए तैयार था।

3

प्रभु येशु को जानना सबसे अद्‌भुत है

[1]आखिर में, मेरे प्रिय भाइयो और बहनो, खुश हो कि तुम्हारी प्रभु के साथ एकता है। मुझे लगता है कि यह ज़रूरी है कि मैं तुमको वही बातें फिर से लिखूँ जो मैं एक बार पहले भी लिख चुका हूँ। वास्तव में, यह बातें तुम्हें झूठे रीतिरिवाजों के जाल में फँसने से बचाएँगी।

[2]उन बुरे लोगों से सावधान रहें जो हिंसक जानवरों की तरह
तुम्हारी खाल को उधेड़ देना चाहते हैं। वे दूसरे समाज के लोगों को
चीरा-संस्कार कराने के लिए मजबूर करना चाहते हैं। [3]पर हम परमात्मा
के सच्चे लोग उनकी सेवा करने के लिए परमात्मा की पवित्र आत्मा
के द्वारा शक्ति प्राप्त करते हैं। हमें इस बात का पूरा भरोसा है कि हमें
मुक्तिदाता येशु से ही मुक्ति मिली है न कि मोशे के नियम और शिक्षा
का पालन करने से, [4]हालाँकि मैं नियम और शिक्षा का पालन कड़ाई से
करने पर घमंड कर सकता हूँ। यदि कोई सोचता है कि इनका पालन
करने से उसको मुक्ति मिल सकती है, तो मैंने इन का पालन उनसे
कहीं बढ़कर किया है। [5]जन्म के आठवें दिन मेरा चीरा-संस्कार हुआ।
मैं इज़राएल के राष्ट्रपिता याकोब के गोत्र का हूँ और यहाँ तक कि
उनके पुत्र बिन्यामिन के वंश का, खून से पक्का यहूदी हूँ। मैंने मोशे के
नियम और शिक्षा का पालन कड़ाई से किया और मैं एक कट्टर फरीसी
था। [6]मेरी धार्मिक कट्टरता के कारण मैंने प्रभु येशु के सत्संग के भक्तों
को सताया। सब सोचते थे कि मैं एक अच्छा भक्त हूँ क्योंकि मैं मोशे
के हर एक नियम और शिक्षा का पालन करता था।

[7]परंतु इन सब घमंड से भरी बातों को मैंने मुक्तिदाता के साथ मेरे
सम्बन्ध की तुलना में बेकार समझा। [8]मुझे मुक्तिदाता प्रभु येशु को
जानने से बढ़कर कुछ भी अद्भुत नहीं लगा। मैंने उन सब धार्मिक
चीज़ों को छोड़ दिया है जिन पर मुझे घमंड था और अब इन्हें मैं बेकार
समझता हूँ। [9]अब मैं मुक्तिदाता में अपने आप को डुबो देना चाहता
हूँ। ऐसा करना मेरे लिए मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करने
से संभव नहीं था। लेकिन मुक्तिदता येशु में आस्था रखने के माध्यम
से, परमात्मा ने मेरे बुरे कर्मों के खाते को मिटा दिया और मुझे अपना
धर्मी भक्त बना लिया। यह सब मेरी परमात्मा में आस्था के द्वारा संभव
हुआ! [10]जीवन में मेरा लक्ष्य मुक्तिदाता को गहराई से जानना है, और
मैं उनकी पीड़ा और मृत्यु का अनुभव करना चाहता हूँ और फिर मैं
मृत्यु को हरा देने की उनकी शक्ति का भी अनुभव करना चाहता हूँ।
[11]और मैं यह भी चाहता हूँ कि परमात्मा मुझे मृत्यु के बाद जीवन दें।

[12]मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि मैंने पहले ही इन चीजों को
हासिल कर लिया है या मैं पहले ही सिद्ध बन चुका हूँ। परंतु मैं उस सिद्धता
को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ता जाता हूँ जिसके लिए मुक्तिदाता येशु
ने मुझे पहले ही चुन लिया है। [13]भाइयो और बहनो, मैं नहीं मानता कि
मैं उस सिद्धता के लक्ष्य तक पहुँच चुका हूँ। केवल इतना कह सकता
हूँ कि पुरानी बातों को पीछे छोड़ चुका हूँ, और जो आगे है उसको प्राप्त
करने की कोशिश में हूँ। [14]मेरा लक्ष्य है कि मैं परमात्मा द्वारा परमस्वर्ग में
बुलाए जाने का इनाम जीत सकूँ, इसलिए में उस और दौड़ा चला जाता हूँ!
मुक्तिदाता येशु ने जो हमारे लिए किया है उसके कारण परमात्मा हमें यह
इनाम देते हैं। [15]जो सिद्धता की ओर आगे बढ़ना चाहते हैं, उनकी भी हमारे
समान सही सोच होनी चाहिए। लेकिन अगर तुम में से किसी की ऐसी सही
सोच नहीं है, तो तुम प्रार्थना करो और परमात्मा तुम्हें बताएँगे कि तुम्हें कहाँ
पर बदलाव लाने की ज़रूरत है। [16]परमात्मा ने हमें अपने परिवार में जोड़
लिया है, इसलिए हमें उनके बच्चों की तरह व्यवहार करना चाहिए।

नरक में कौन नष्ट होगा

[17]मेरे भक्त भाइयो और बहनो, मैं चाहता हूँ कि जैसे मैंने जीवन जिया है
वैसे ही तुम भी जीयो और उन लोगों से सीखो जिन्होंने हमारी शिक्षाओं

को अपना लिया है। [18]क्योंकि मैं तुमसे पहले भी अनेक बार कह चुका हूँ और अब भी रो-रोकर कहता हूँ कि ऐसे बहुत से लोग इस तरह से व्यवहार करते हैं जिससे पता चलता है कि वे मुक्तिदाता के दुश्मन हैं, क्योंकि वे नहीं चाहते कि लोग जानें कि मुक्तिदाता के क्रूस पर बलि होने से क्या संदेश मिलता है।
[19]परमात्मा उन्हें एक दिन नष्ट कर देंगे। वे सिर्फ शरीर की इच्छाओं को पूरा करने के लिए जीते हैं। वे अपने बेईमान मन को अपना गौरव समझते हैं और उनका ध्यान सांसारिक चीज़ों में ही लगा रहता है।
[20]परंतु हमारी असली नागरिकता परमात्मा के साथ परमस्वर्ग में है, इस संसार में नहीं। हम मसीहा मुक्तिदाता प्रभु येशु का परमस्वर्ग से इस दुनिया में लौटने का इंतज़ार कर रहे हैं।
[21]मुक्तिदाता आएँगे और हमारे कमज़ोर शरीरों को बदलकर अपने जैसा दिव्य तेजस्वी शरीर बना देंगे। वह अपनी महान शक्ति से ऐसा करेंगे।

4

भक्तों के नाम मोक्ष की पुस्तक में लिखे हैं

[1]मेरे भक्त भाइयो और बहनो, मैं तुमको प्रेरणा देना चाहता हूँ कि तुम प्रभु में अपनी आस्था में मज़बूत रहो। तुम मेरे दोस्त हो और मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ। तुम्हारे जीवन के बारे में जानकर मुझे खुशी मिलती है और मुझे तुम पर बहुत गर्व है।*

[2]मैं बहन यूओदिया और बहन संतीखे से विनती करता हूँ कि आपस में झगड़ा न करें, इसके बजाय एक दूसरे से प्रेम करें क्योंकि तुम दोनों प्रभु येशु की भक्त हो।
[3]हे मेरे सच्चे सहयोगी, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम इन दोनों बहनों की सहायता करो, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ-साथ मुक्तिदाता का शुभ संदेश सुनाने के लिए भाई क्लेमेंट और मेरे अन्य सहयोगियों के साथ मेहनत की है। इन सब भक्तों के नाम परम स्वर्ग में रखी मोक्ष पुस्तक में अभी से लिखे जा चुके हैं।

[4]तुम्हारा सम्बन्ध प्रभु येशु से है, इसलिए हमेशा खुश रहो! मैं फिर कहता हूँ, खुश रहो!
[5]तुम्हारा मीठा स्वभाव सब को नज़र आना

---

* **4:1** *तुम्हारे जीवन के बारे में जानकर मुझे खुशी मिलती है और मुझे तुम पर बहुत गर्व है* - या, “तुम, जो मेरा आनंद और मुकुट हो”

चाहिए। इस बात को याद रखें की प्रभु येशु जल्दी ही दुनिया में वापस
आने वाले हैं। 6किसी बात की चिंता न करो परंतु हर बात के लिए
प्रार्थना करो। परमात्मा को बताएँ कि तुम्हें क्या चाहिए, और जो कुछ
परमात्मा ने तुम्हारें लिए किया है उसके लिए उनको धन्यवाद दें।
7तब परमात्मा की शांति, जो हमारी कल्पना से कहीं अधिक तस्सली
देने वाली है, इस जीवन की तेज़ धूप में एक छाया बनकर हमें सुरक्षा
देगी। और जब हम मुक्तिदाता येशु के साथ एक हो जाते हैं तो यह
शांति हमारे दिमाग को बुराई से बचाएगी।

पौलुस के पत्र के आखिरी शब्द

8भक्त भाइयो और बहनो, आखिरी बात जो मैं तुम से कहना चाहता
हूँ, जो कुछ सत्य है, जो कुछ आदरयोग्य है, जो कुछ सही है, जो कुछ
पवित्र है, जो कुछ सुखद है, जो कुछ सराहनीय है, यदि कहीं भी कुछ
बढ़िया या बड़ाई के योग्य हैं, तो ऐसी चीज़ों के बारे में सोचा करो।
9जो कुछ तुमने मुझसे सीखा और अपनाया है, और जो कुछ तुमने मुझे
करते और कहते देखा है, उन बातों को अपने जीवन में लागू करो।
तब परमात्मा, जो हर स्थिति में शांति देते हैं, तुम्हारे साथ रहेंगे।

10प्रभु ने मुझे यह खुशी दे दी है कि तुमने काफी समय बाद फिर से
मुझे याद किया है। दरअसल, मुझे लगता है कि तुम मेरे बारे में सोच
तो रहे थे, लेकिन तुम्हें मेरी मदद करने का मौका नहीं मिला। 11मैं
यह इसलिए नहीं कह रहा कि मुझे तुम्हरी मदद चाहिए, क्योंकि चाहे
मेरी परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो, मैंने संतोष करना सीख लिया है।
12मैं बहुत कमी के साथ भी जिया हूँ और खुशहाली के साथ भी। मैंने,
कंगाली हो या खुशहाली, भूखे पेट और भरे पेट, हर हालात में खुश
रहने का रहस्य जान लिया है। 13मैं हर हालात का डटकर सामना कर
सकता हूँ क्योंकि मुक्तिदाता मुझे शक्ति देते हैं।

14-15फिर भी फिलिपी शहर के सत्संगियों, अच्छा किया कि परेशानी
के समय तुमने मेरा साथ दिया। जैसा तुम स्वयं जानते हो कि जब मैं
तुम्हारे मैसेडोनिया प्रदेश से शुभ संदेश का प्रचार करके निकला, तब
मुझे तुम्हारे अलावा किसी अन्य सत्संग से आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं
हुई। 16जब मैं तुम्हारे मैसेडोनिया प्रदेश के दूसरे शहर थिसलोनीकी

में था तब भी तुमने, एक बार नहीं, दो बार आर्थिक मदद भेजी। [17]यह
बात नहीं कि मुझे तुमसे कुछ चाहिए। नहीं, परंतु मैं यह चाहता हूँ कि
दानी मन से जो आशीर्वाद मिलता है उससे तुम भरे रहो। [18]तुमने जो
कुछ भी इपाफ्रोदितास के हाथों मेरे लिए भेजा था वे सबकुछ मिल
गया है और तुमने सब चीज़ें बड़ी दरिया दिली से भेजी हैं और अब
मेरे पास किसी चीज़ की कमी नहीं है। जो कुछ तुमने मुझे दिया है वह
परमात्मा के लिए जलाई गई अगरबत्ती की मीठी खुशबू के समान है
और ऐसी बलि परमात्मा को बहुत पसंद है। [19]मेरा परमात्मा मुक्तिदाता
येशु द्वारा अपने कभी न खत्म होने वाले खज़ाने से तुम्हारी हर एक
ज़रूरत पूरी करेंगे। [20]हमारे पिता परमात्मा के तेज का गुणगान हमेशा
तक होता रहे। सत्य परमात्मा की जय!

[21]मुक्तिदाता येशु के हर एक पवित्र भक्त को मेरा नमस्कार। जो भाई
मेरे साथ हैं, वे तुम्हें अपना नमस्कार भेज रहे हैं। [22]परमात्मा के बाकी
सब पवित्र भक्त जो इस शहर में रहते हैं, और खासतौर से वे भक्त जो
रोम साम्राज्य के सम्राट के यहाँ काम करते हैं, तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।

[23]मुक्तिदाता प्रभु येशु की कृपा तुम पर बनी रहे।